केंद्रीय बैंक के आउटपुट का आकलन - भारत के लिए पद्धति संबंधी मुद्दे

पी. भुयान

भारतीय रिज़र्व बैंक वर्किंग पेपर श्रृंखला के अंतर्गत 28 अप्रैल 2016 को "केंद्रीय बैंक के आउटपुट का आकलन-भारत के लिए पद्धति संबधी मुद्दे" नामक वर्किंग पेपर प्रकाशित किया गया था। यह पेपर पी. भुयान[1], द्वारा लिखा गया है।

यह पेपर भारतीय संदर्भ में केंद्रीय बैंक के आउटपुट से संबंधित पद्धति संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श करता है। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई), भारत सरकार (जीओआई) रिज़र्व बैंक के आउटपुट सहित अर्थव्यवस्था के आउटपुट को संकलित करता है। जीडीपी की पूर्ववर्ती श्रृंखलाओं में, सीएसओ द्वारा संकलित भारतीय रिज़र्व बैंक का आउटपुट आंशिक रूप से बाजार और आंशिक रूप से गैर-बाजार आधारित था। तथापि, भारतीय रिज़र्व बैंक के संपूर्ण आउटपुट को अब सीएसओ द्वारा 2011-12 आधार वर्ष के साथ जीडीपी की नई श्रृंखला में गैर-बाजार के रूप में माना जाता है। एसएनए 2008 के अनुसार लागत दृष्टिकोण भारतीय रिज़र्व बैंक के आउटपुट का आकलन करने के लिए अपनाया गया है। भारतीय रिज़र्व बैंक के आउटपुट में नई पद्धति के अनुसार लगभग 87 प्रतिशत गिरावट देखी गई।

पेपर में तर्क दिया गया है कि भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यकलापों का सामूहिक स्वरूप इसके पूरे आउटपुट को एसएनए 2008 सिफारिशों के अनुसार गैर-बाजार के रूप में माने जाने का प्रमुख कारण हो सकता है किंतु यह गैर-बाजार से बाजार आउटपुट को अलग नहीं करने का कारण नहीं माना जा सकता है। नियत पूंजी की खपत का अनुमान लगाने के लिए पेपर में एक वैकल्पिक चिरस्थायी इन्वेंटरी पद्धति (एपीआईएम) प्रस्तुत की गई है। यह पेपर भारतीय रिज़र्व बैंक के आउटपुट के आकलन के कुछ पहलुओं पर चर्चा करता है और इसका आकलन करने की पद्धति का प्रस्ताव करता है।

[1] पी.भुयान भारतीय रिज़र्व बैंक,सांख्यिकी और सूचना प्रबंध विभाग, मुंबई में निदेशक हैं। इस पेपर में व्यक्त विचार लेखक के होते है, भारतीय रिज़र्व बैंक के नहीं होते है।